समाज विकासमाला

द्वारका

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १७

द्वारका

हमारा एक महान तीर्थ

लेखक
वीरेन्द्र

सम्पादक
यशपाल जैन

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५५

कुल छपी संख्या
२६०००

मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रख कर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

आपने द्वारका का नाम सुना होगा। वह हमारा बहुत बड़ा तीर्थ है। देश के कोने-कोने से लोग वहाँ जाते हैं। मथुरा को छोड़कर कृष्ण भगवान वहीं जाकर बसे थे। धार्मिक लोगों के लिए उसकी बड़ी महिमा है। जो घूमने के शौकीन हैं, उनको भी वहां की सुन्दरता को देखकर बड़ा आनंद मिलता है।

द्वारका की बड़ी रोचक कहानी है। वह आपको इसमें पढ़ने को मिलेगी। साथ ही आपको उस नगरी के आज के रूप के भी दर्शन होंगे। इस छोटी-सी पुस्तक में आपको द्वारका के बारे में बहुत-सी जानकारी मिल जायगी और वहाँ जाने की आपकी इच्छा होगी।

—सम्पादक

द्वा र का

: १ :

हमारा देश बहुत बड़ा है । इसमें कितने ही स्थान इतने सुन्दर हैं कि देख कर हर्ष होता है । यहां बर्फ से ढके ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं। लहलहाते खेत और हरे-भरे मैदान हैं। समुद्र के किनारे हैं, जिनपर खड़े होकर लहरों के उठने और गिरने को देखने से मन नहीं भरता । ऐसी ही सुन्दर जगहों पर बहुत-से तीर्थ बनाये गये हैं । इसलिए कि हम इस धरती की सुन्दरता को देखें, साथ ही इस धरती को बनाने वाले भगवान की लीला के भी दर्शन करें ।

ऐसे बहुत-से तीर्थ हमारे इस देश में हैं। द्वारका भी ऐसा ही एक तीर्थ है । यह दूर पश्चिम में समुद्र के किनारे पर बसी है। आज से हजारों साल पहले भगवान कृष्ण ने इसे बसाया था। द्वारका का नाम सुनते ही एक पुराना जमाना आंखों के आगे घूम जाता है। कृष्ण मथुरा में पैदा हुए, गोकुल में पले, पर राज उन्होंने इस द्वारका में ही किया। यहीं बैठकर उन्होंने सारे

देश की बागडोर अपने हाथ में संभाली। पांडवों को सहारा दिया। धर्म की जीत कराई और जरासंध, शिशुपाल और दुर्योधन जैसे अधर्मी राजाओं को मिटाया। द्वारका उस जमाने में राजधानी बन गई थी। बड़े-बड़े राजा यहां आते थे और बहुत-से मामलों में भगवान कृष्ण की सलाह लेते थे।

आज भी द्वारका की महिमा है। यह चार धामों में एक धाम है। सात पुरियों में एक पुरी है। इसकी सुन्दरता बखानी नहीं जाती। समुद्र की बड़ी-बड़ी लहरें उठती हैं और इसके किनारों को इस तरह धोती हैं, जैसे इसके पैर पखार रही हों। जब संध्या के समय सूर्य डूबता है तो इस नगरी का रूप निखर उठता है और जब पीली-पीली किरणें समुद्र के नीले पानी पर अठखेलियां करती हैं तो ऐसा लगता है, मानो स्वयं भगवान कृष्ण ही पीली चादर ओढ़े सो रहे हों। सूर्य की किरणें द्वारका के ऊंचे-ऊंचे मन्दिरों पर पड़ती हैं तो उनके सोने के कलश जगमगा उठते हैं। समुद्र की गर्जन ऐसी लगती है, जैसे कोई बड़े उत्साह से मृदङ्ग बजा रहा हो।

पहले तो मथुरा ही कृष्ण की राजधानी थी। पर मथुरा उन्होंने छोड़ दी और द्वारका बसाई।

इतनी दूर, सैकड़ों कोस दूर। कुछ तो समुद्र किनारे की सुन्दरता उन्हें भा गई और कुछ दूसरे कारण भी पैदा हो गए। कृष्ण ने कंस को मारा था। कंस का बदला लेने के लिए उसके ससुर जरासंध ने मथुरा पर हमला कर दिया। जरासंध मगध का राजा था। उस समय के राजाओं में वह सबसे बलवान था। महाभारत में लिखा है कि इसने बीस हजार आठ सौ राजाओं को पकड़ कर अपनी कैद में बन्द कर लिया था। एक बहुत बड़ी फौज को लेकर इसने मथुरा को आ घेरा। पर कृष्ण और बलराम ने इसे हराकर भगा दिया। वह फिर चढ़ आया। फिर हारकर भागा। इस तरह उसने सत्तरह हमले किये। मथुरा के लोग तंग आ गए। गांव उजड़ गए। खेती का नाश हो गया। सबने कृष्ण से कहा कि महाराज कहीं ऐसी जगह चला जाय, जहां जरासंध न पहुंच सके और प्रजा सुख से अपना काम-काज कर सके। कृष्ण ने सोच-विचार कर दूर पश्चिम में जाने का निश्चय किया। समुद्र का यह किनारा उन्हें पसंद आया। उन्होंने विश्वकर्मा को आज्ञा दी और बात-की-बात में एक विशाल नगर बनाकर खड़ा कर दिया गया।

द्वारका के कितने ही महल सोने और चांदी से बनाये गए थे। दीवारों में हीरे और मोती जड़े गए थे

और नीलम से तरह-तरह की तस्वीरें उनपर बनाई गई थीं। बाकी महल पत्थर के थे। आज भी द्वारका से कुछ दूर पोरबन्दर नामक नगर में पत्थर का बड़ा सुन्दर काम होता है। यहां कारीगर पत्थर को इस तरह चीरते हैं, जैसे बढ़ई लकड़ी को चीरते हैं। द्वारका के चारों ओर एक बहुत ऊंचा परकोटा तैयार किया गया था, जिसमें चार दरवाजे थे। इसीलिए इस नगरी का नाम रखा गया था 'द्वारका' यानी 'दरवाजोंवाली नगरी।' जब भगवान कृष्ण को पता लगा कि नगर बनकर तैयार हो गया है तब वह यादवों और उनके परिवारों के साथ द्वारका की ओर चल दिये।

दूर का रास्ता था। महीनों चलना पड़ा होगा। तब कहीं द्वारका पहुंचे होंगे। आखिरी पड़ाव जहां पड़ा, वह जगह अब भी है। उसे 'मूल द्वारका' कहते हैं। हो सकता है कि यहांपर द्वारका के बनाने वाले विश्वकर्मा ने कृष्ण का स्वागत किया हो। इस 'मूल द्वारका' में बहुत-से छोटे-छोटे मन्दिर हैं। द्वारका की यात्रा करनेवाले यहां जरूर आते हैं। यहां के मन्दिरों के दर्शन करके ही आगे जाते हैं।

कृष्ण से पहले इस देश का राजा दूसरा था। उसका नाम था रैवतक। उसके नाम पर यहां एक पहाड़ का

नाम भी रैवतक पर्वत पड़ गया था। यह पर्वत कृष्ण को बड़ा प्यारा था और वह यहां हर साल आकर कुछ दिन रहा करते थे। राजा रैवतक ने अपनी लड़की रेवती का विवाह बलराम के साथ कर दिया था और स्वयं जंगलों में तपस्या करने चला गया था। द्वारका में बसने के बाद यादवों की बहुत-सी चिंता खत्म हो गई। सब शांति से रहने लगे। किसीके हमले और झगड़े का डर उन्हें नहीं रहा।

द्वारका समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा बन्दरगाह बन गई। आज भी द्वारका एक अच्छा बन्दरगाह है। दूसरे देशों से द्वारका के रहनेवाले व्यापार करने लगे। हीरे, मोती और तरह-तरह की दूसरी चीजें उन देशों से यहां आने लगीं। कुछ ही दिनों में द्वारका बड़ी धनी नगरी बन गई। बहुत-से लोग सोचते हैं कि जहाज हाल में ही बने हैं। पहले नहीं थे। कुछ यह भी सोचते हैं कि दूर-दूर के देशों से पहले व्यापार नहीं होता था। बात ऐसी नहीं है। हमारे देश के बहुत-से लोग दुनिया के कोने-कोने में घूमे थे। सबसे उनका लेन-देन था। तभी तो महाभारत की लड़ाई में सिर्फ हिन्दुस्तान के राजा ही नहीं, दूसरे देशों के राजा भी शामिल हुए थे। इस व्यापार से द्वारका का नाम सब कहीं फैल गया।

इसके साथ ही हमारे देश की सभ्यता भी दूर-दूर देशों में गई। दूसरी जातियों ने भी उसे अपनाया।

श्रीकृष्ण ने कंस को मारकर मथुरा का राज अपने हाथ में लिया था। वह सबके थे। सबसे उन्हें प्रेम था। इसलिए उनका राज करने का ढंग भी कंस और जरासंध जैसे राजाओं से बिलकुल अलग था। कंस और जरासंध मनमानी करनेवाले राजा थे। उधर कृष्ण ने अपने को राजा कहलाना भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कंस के पिता उग्रसेन को राजा बनाया। फिर एक सभा बनाई, उसी तरह जिस तरह आजकल हमारे देश में संसद है। इस सभा के सभी सदस्य प्रजा ही चुनती थी। इस सभा के कहने के अनुसार राजा उग्रसेन फैसला करते थे, राज-काज चलाते थे। स्वयं तो कृष्ण बस एक सलाहकार थे। वह राजा और उसकी सभा की सहायता किया करते थे। यादवों के इस गणतंत्र या प्रजातंत्र को प्रजा स्वयं चलाती थी। यहां न कोई राजा था और न कोई उसकी प्रजा। सबका अपना ही राज था।

द्वारका की सुख-शांति को देखकर दूर-दूर से ऋषि-मुनि यहाँ आया करते थे। नगर के पास जंगलों में रहकर वे तप और यज्ञ करते थे। प्रभास द्वारका के पास ऐसी ही एक जगह है। कहते हैं, किसी जमाने

में यहां चन्द्रमा ने बड़ा भारी तप किया था। शिवजी ने खुश होकर उसको दर्शन दिए। सोमनाथ का मन्दिर उसी तप की यादगार है। इसके सिवा दुर्वासा ऋषि भी यहां आकर रहे थे और दूसरे कितने ही ऋषि भी यहां अक्सर आया करते थे। यादवों का इस स्थान पर हर साल बड़ा भारी मेला भरता था। इस मेले की रौनक को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे। अर्जुन भी एक बार यहाँ आया था। तभी कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा का विवाह उसके साथ किया था।

द्वारका का काम राजा उग्रसेन को संभलवाकर कृष्ण ने दूसरे बड़े कामों की ओर ध्यान दिया। जिस तरह गांधीजी ने देश के कोने-कोने में जाकर कितनी ही लड़ाइयां लड़ीं, इसी तरह कृष्ण ने शिशुपाल और जरासंध जैसे अत्याचारी राजाओं को मारने के लिए बहुत-से युद्ध किये। पांडवों को उन्होंने अपना साथी बनाया। राजा युधिष्ठिर ने कृष्ण की सलाह से और अपने भाइयों की मदद से सारी धरती को जीता। अश्वमेध यज्ञ किया और धरती पर धर्म का राज स्थापित किया। भगवान कृष्ण का सपना पूरा हुआ। पर युधिष्ठिर ने कुछ ही दिनों बाद एक गलती कर डाली, जिससे सारा बना-बनाया खेल बिगड़ गया।

उन्होंने दुर्योधन के साथ जुआ खेला और सब-कुछ हार गए। तेरह वर्ष के लिए पांडव वनवास में चले गए। इसी बीच दुर्योधन ने अपनी ताकत खूब बढ़ा ली। जब पांडव वनवास से लौटे तो उसने उनका राज वापस देने से इंकार कर दिया। अब दो ही रास्ते सामने रह गए। या तो दुर्योधन के साथ लड़ा जाय या चुपचाप जंगलों में जाकर तप किया जाय। कृष्ण ने डर कर भागने के बदले लड़कर जान देने की सलाह दी। दोनों तरफ से भारी तैयारी की गई। कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। कृष्ण की कृपा से पांडव ही इस लड़ाई में जीते। दुर्योधन और उसके सब साथी मारे गए। भारत में पांडवों का राज हो गया। धर्म की जीत हुई।

ये सब इतने बड़े काम थे कि कृष्ण को बहुत वर्षों तक द्वारका के बाहर रहना पड़ा। इधर द्वारका के रहने-वाले सुख और चैन में मस्त थे। उनके पास खूब धन था। वे जी भरकर आनन्द मनाते थे। उनके परिवार खूब बढ़ रहे थे। जितने बर्तन अधिक होते हैं, उतने ही आपस में टकराते हैं। जितने आदमी बढ़ गए उतने ही आपस के झंझट भी बढ़ने लगे। भगवान कृष्ण का नाम बहुत बढ़ गया था। साथ ही यादवों का नाम भी बहुत ऊंचा हो गया। इससे यादवों को बड़ा घमंड हो गया।

वे ऋषि-मुनियों तक की परवाह नहीं करते। किसी-का भी अपमान करते वे डरते नहीं थे। इसका नतीजा बड़ा भयानक हुआ। सदा की तरह एक बार प्रभास तीर्थ में उनका मेला भरा। सारी द्वारका वहां इकट्ठी हुई। एक मामूली-सी बात पर आपस में तनातनी हो गई। कृष्ण और बलराम में से कोई भी उस समय वहां न था। झगड़ा बढ़ता गया। मारकाट मच गई। सारे यादव कुछ ही समय में कट मरे।

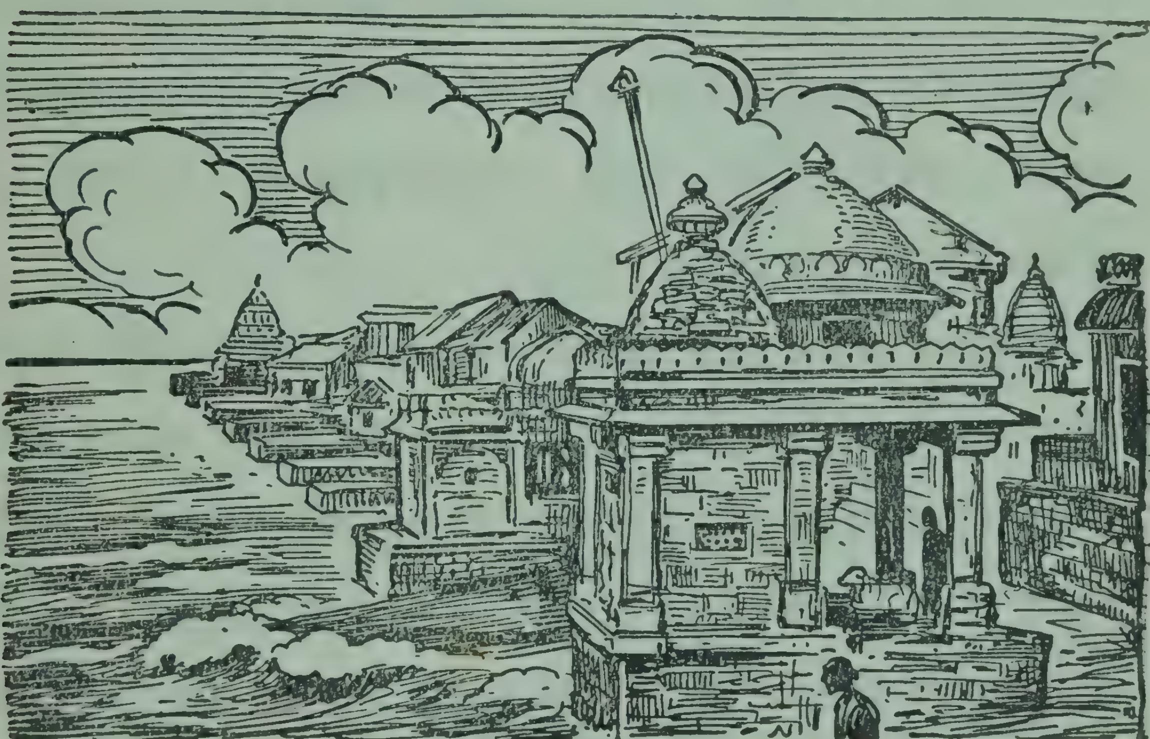
महाभारत में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है। गान्धारी कौरवों की मां थी। जब उसने अपने बेटों का मरना देखा तो उसने कृष्ण को शाप दे डाला। उसने कहा, "हे कृष्ण, जिस तरह मेरा वंश खत्म हुआ उसी तरह तेरा भी होगा।" कुछ ही दिनों बाद की बात है। द्वारका के बाहर बहुत-से ऋषि मुनि आये हुए थे। वे वहां तप कर रहे थे। साम्ब आदि कृष्ण के कई बेटों ने सोचा कि देखें ये साधु लोग कुछ ज्ञान भी रखते हैं या नहीं। साम्ब बड़ा सुन्दर था। उसने स्त्री का वेश बनाकर अपने पेट पर बहुत-सा कपड़ा लपेट लिया। ये सब लड़के ऋषियों के सामने जा पहुंचे और पूछने लगे कि महाराज, बताइये इस औरत के पेट से क्या पैदा होगा। ये साधु मन की बात जान लेते थे। उन्होंने समझ

लिया कि ये लड़के हमसे मजाक कर रहे हैं। उनमें से एक थे महर्षि वृन्द। उनको बड़ा क्रोध आया। उन्होंने शाप दिया कि इस औरत के पेट से जो चीज पैदा होगी उससे सारे यादव आपस में कटकर मर जायेंगे।

बच्चों का यह विनोद ही सारे कबीले के गले की फांसी बन गया। कुछ दिन बाद साम्ब के पेट से लोहे का एक छोटा-सा मूसल निकल पड़ा। सबने सलाह करके इस मूसल का चूरा कराके समुद्र में फिकवा दिया। यह चूरा बहता-बहता प्रभास तीर्थ तक पहुंच गया। वहां लहरों ने इसे जमीन पर फेंक दिया। इस मूसल के चूरे से किनारे पर लम्बी-लम्बी घास उग आई। कुछ दिनों बाद सारे यादव प्रभास तीर्थ नहाने आये। नहाते-नहाते उनमें आपस में झगड़ा हो गया। झगड़ा इतना बढ़ा कि मार-काट मच गई। किनारे की घास तलवार की धार की तरह तेज थी। सबने उसे उखाड़ लिया और एक दूसरे को मारने लगे। मौत ने सबको अन्धा बना दिया था। एक भी यादव जिन्दा न बचा। जब कृष्ण और बलराम वापस आये तो यह हाल देखकर बहुत दुःखी हुए।

: २ :

अब द्वारका एक छोटा-सा कस्बा है। यहाँ बहुत-सी धर्मशालाएं हैं। जरूरत की सभी चीजें आसानी से यहां मिल जाती हैं। कस्बे के एक हिस्से के चारों ओर चहारदीवारी खिची है। इसके भीतर ही सारे बड़े-बड़े मन्दिर हैं। द्वारका के दक्षिण में एक लम्बा ताल है। इसे गोमती तालाब कहते हैं। समुद्र के पानी से यह भरा रहता है। इसमें नहाने का बड़ा पुण्य माना जाता है। इसके नाम पर ही द्वारका को गोमती द्वारका कहते हैं।



द्वारका के समुद्र-तट के घाटों का दृश्य

इस गोमती तालाब के ऊपर ९ घाट हैं। इनमें

सरकारी घाट के पास एक कुण्ड है, जिसका नाम निष्पाप कुण्ड है, इसमें गोमती का पानी भरा रहता है। नीचे उतरने के लिए पक्की सीढ़ियां बनी हैं। यात्री सबसे पहले इस निष्पाप कुण्ड में नहाकर अपने को शुद्ध करते हैं। बहुत-से लोग यहां अपने पुरखों के नाम पर पिंड-दान भी करते हैं।

गोमती के दक्षिण में पांच कुंए हैं। निष्पाप कुण्ड में नहाने के बाद यात्री इन पांचों कुंओं के पानी से कुल्ले करते हैं। तब रणछोड़जी के मन्दिर की ओर जाते हैं। रास्ते में कितने ही छोटे मन्दिर पड़ते हैं--कृष्णजी, गोमती माता और महालक्ष्मीजी के मन्दिर। इन सबके दर्शन करते-करते यात्री रणछोड़जी के मन्दिर के फाटक पर पहुंच जाते हैं।

रणछोड़जी का मन्दिर द्वारका का सबसे बड़ा और सबसे बढ़िया मन्दिर है। भगवान कृष्ण को उधर रणछोड़जी कहते हैं। लोगों की भीड़ यहां इकट्ठी रहती है और मन्दिर का बड़ा घंटा बार-बार बजता रहता है। पुजारी जोर-जोर से मंत्र पढ़ते है। सामने ही कृष्ण भगवान की चार फुट ऊंची मूर्त्ति है। यह चांदी के सिंहासन पर विराजमान हैं। मूर्त्ति काले पत्थर की बनी है। हीरे-मोती इसमें चमचमाते हैं। सोने की ग्यारह

मालाएं गले में पड़ी हैं। कीमती पीले वस्त्र पहने हैं। भगवान के चार हाथ हैं। एक में शंख है, एक में सुदर्शन चक्र। एक में गदा और एक में कमल का फूल। सिर पर सोने का मुकुट है। लोग भगवान की परिक्रमा करते हैं और उनपर फूल और तुलसी-दल चढ़ाते हैं। मन्दिर का फर्श इतना चिकना है कि फिसलने का डर रहता है। वह इतना चमकीला है कि उसमें अपनी सूरत देख सकते हैं। चौखटों पर चांदी के पत्तर मढ़े हैं। मन्दिर की छत में बढ़िया-बढ़िया कीमती झाड़-फानूस लटक रहे हैं। एक तरफ ऊपर की मंजिल में जाने के लिए सीढ़ियां हैं। पहली मंजिल में अम्बा-देवी की मूर्त्ति है—ऐसी सात मंजिलें हैं और कुल मिलाकर यह मन्दिर एक सौ चालीस फुट



रणछोड़जी का मन्दिर

ऊंचा है। इसकी चोटी आसमान से बातें करती है।

रणछोड़जी के दर्शन के बाद मन्दिर की परिक्रमा की जाती है। मन्दिर की दीवार दोहरी है। दो दीवारों के बीच इतनी जगह है कि एक आदमी समा सके। यही परिक्रमा का रास्ता है।

रणछोड़जी का मन्दिर बड़ा पवित्र माना जाता है। इसकी बड़ी महिमा है। मेवाड़ की महारानी मीरा कृष्ण की बड़ी भक्त थीं। वह कहती थीं, कृष्ण ही मेरे स्वामी हैं। अपने महल में उन्होंने मुरलीवाले का एक मन्दिर बनवाया था। वहीं वह रात-दिन अपने स्वामी की सेवा में लगी रहती थीं। रात-दिन गाना-नाचना और कीर्त्तन करना, यही उनका काम था। कुछ समय बाद उन्होंने मेवाड़ छोड़ दिया। वह मथुरा-वृन्दावन चली गईं। वहां से बड़े दुःख उठातीं यहां द्वारका आईं और इसी रणछोड़जी के मन्दिर में भगवान के चरणों में रहने लगीं। कुछ ही दिनों बाद मेवाड़ के लोग अपनी रानी को लेने आये। मीरा जाना नहीं चाहती थीं। वह रणछोड़जी के सामने पहुंच कर रोने लगीं। भगवान हमेशा भक्तों की मनचाही करते हैं। उन्होंने मीरा को अपने अन्दर समा लिया।

रणछोड़जी के मन्दिर के सामने एक बहुत लम्बा-

चौड़ा १०० फुट ऊंचा जगमोहन है। इसकी पांच मंजिलें हैं और इसमें ६० खम्बे हैं। रणछोड़जी के बाद इसकी परिक्रमा की जाती है। इसकी दीवारें भी दोहरी हैं।

दक्षिण की तरफ बराबर-बराबर दो मंदिर हैं। एक दुर्वासाजी का और दूसरा बड़ा मन्दिर त्रिविक्रमजी का। वहां त्रिविक्रमजी को टीकमजी कहते हैं। इनकी बड़ी पूजा की जाती है। इनका मन्दिर भी बहुत सजा-धजा है। मूर्त्ति बड़ी लुभावनी है और कपड़े-गहने कीमती हैं। वहां के पंडे टीकमजी की कहानी बड़े प्रेम से सुनाते हैं। बताते हैं कि दुर्वासा ऋषि द्वारका में ही रहा करते थे। एक बार कुश नाम के एक राक्षस ने यहां के रहनेवालों को सताना शुरू कर दिया। जब कुश किसी भी तरह बस में न आया तो दुर्वासा ऋषि पाताल गए। वहां के राजा बलि से वह त्रिविक्रम भगवान को मांग लाये। त्रिविक्रमजी ने कुश को जमीन में गाड़ दिया और उसके ऊपर शिवजी की मूर्त्ति रखदी। तबसे शिवजी कुशेश्वर भगवान भी कहलाने लगे।

त्रिविक्रमजी के मन्दिर के बाद प्रद्युम्नजी के दर्शन करते हुए यात्री इन कुशेश्वर भगवान के मन्दिर में जाते हैं। मन्दिर में एक बहुत बड़ा तहखाना है। इसीमें शिव का लिंग है और पार्वती की मूर्त्ति है। पंडे कहते हैं कि

यही वह जगह है, जहां त्रिविक्रमजी ने कुश को धरती में गाड़ा था। यहांपर घी और लड्डू चढ़ाये जाते हैं।

कुशेश्वर शिव के मन्दिर के बराबर-बराबर दक्षिण की ओर छः मन्दिर और हैं। इनमें अम्बाजी और देवकी माता के मन्दिर खास हैं।

रणछोड़जी के मन्दिर के पास ही राधा, रुक्मिणी, सत्यभामा और जाम्बवती के छोटे-छोटे मन्दिर हैं। इनके दक्षिण में भगवान का भण्डारा है और भण्डारे के दक्षिण में शारदा मठ है।

शारदा मठ को गुरु शंकराचार्य ने बनाया था। उन्होंने पूरे देश के चार कोनों में चार मठ बनाये थे। उनमें एक यह शारदा मठ है। यहां बड़े-बड़े ज्ञानी महात्मा रहते हैं और लोगों को धर्म का उपदेश करते हैं। शारदा मठ में जाकर यात्री शंकराचार्यजी के कामों के बारे में सुनते हैं। शंकराचार्य में आत्मा की बड़ी भारी ताकत थी। यह उस समय पैदा हुए थे जब हिन्दू धर्म की बुरी हालत थी। लोग पूजा-पाठ भूल चुके थे। भगवान में भी उनका विश्वास नहीं रह गया था। शंकराचार्य ने तेरह बरस की उम्र में सारे वेद-शास्त्र पढ़ डाले और संन्यासी हो गए। तब यह धर्मका प्रचार करने निकल पड़े। देश के कोने-कोने में जाकर इन्होंने लोगों को जगाया।

बहुत-सी किताबें इन्होंने लिखीं। यह सारा काम इन्होंने अट्ठाईस साल की उम्र में ही कर डाला। अट्ठाईस साल पूरे होते ही उनकी मृत्यु हो गई। इन्हींके बनाये हुए ये चार मठ आज भी विद्या का प्रचार करते हैं। दूर-दूर से विद्यार्थी यहां संस्कृत सीखने आते हैं।

रणछोड़जी के मन्दिर से द्वारका शहर की परिक्रमा शुरू होती है। पहले सीधे गोमती के किनारे जाते हैं। गोमती के नौ घाटों पर बहुत-से मन्दिर हैं——सांवलियाजी का मन्दिर, गोवर्धननाथजी का मन्दिर, महाप्रभुजी की बैठक। आगे वासुदेव घाट पर हनुमानजी का मन्दिर है। आखिर में संगम घाट आता है। यहां गोमती समुद्र से मिलती है। इस संगम पर संगम-नारायणजी का बहुत बड़ा मन्दिर है।

यहां की शोभा निराली है। सामने ही समुद्र है। इसमें हमेशा ऊंची-ऊंची लहरें उठती रहती हैं। इस ओर गोमती है। ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कि गोमती समुद्र की बेटी हो। दिन-रात में कई बार ज्वार-भाटा आता है। किनारे पर बहुत-से चक्र, कौड़ियां आदि चीजें पानी के उतर जाने पर पड़ी रह जाती हैं। यात्री चक्र को बड़ा पवित्र मानते हैं। पूजा करने के लिए उसे अपने साथ घर ले आते हैं।

संगम-घाट के उत्तर में समुद्र के ऊपर एक और घाट है। इसे चक्र-तीर्थ कहते हैं। इसीके पास रत्नेश्वर महादेव का मन्दिर है। इसके आगे सिद्धनाथ महादेवजी हैं। आगे एक बावली है, जिसे 'ज्ञान कुण्ड' कहते हैं। इससे आगे जूनीराम बाड़ी है, जिसमें राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्त्तियां हैं। इसके बाद एक और राम का मन्दिर है, जो नया बना है। इसके पास एक और बावली है, जिसे सौमित्री बावली यानी लक्ष्मणजी की बावली कहते हैं। काली माता और आशापुरी माता की मूर्त्तियां इसके बाद आती हैं।

इनके आगे यात्री कैलासकुण्ड पर पहुंचते हैं। इस कुण्ड का पानी गुलाबी रंग का है। यहां के रहनेवाले कहते हैं कि यहीं राजा नृग गिरगिट की योनि में एक हजार साल तक पड़े रहे थे। भगवान कृष्ण के लड़के प्रद्युम्न आदि एक दिन शिकार खेलते-खेलते इस बावली के पास आ निकले। प्यास लगी थी। झांक कर पानी की टोह ली तो क्या देखा कि एक बहुत बड़ा गिरगिट अन्दर पड़ा है। लड़कों ने उसे निकालने की बड़ी कोशिश की, पर वह न निकला। तब वे भगवान कृष्ण को बुला लाये। उन्होंने उसे निकाल कर अपने पैर से छू दिया। गिरगिट फौरन राजा नृग बनकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और भगवान

को प्रणाम कर स्वर्ग को चला गया।

राजा नृग पुराने जमाने में बड़े दानी-धर्मात्मा राजा थे। हजारों गाय रोज ब्राह्मणों को दान करते थे। एक दिन एक दान की हुई गाय भाग कर बिना दान की हुई गायों में आकर मिल गई। राजा ने उसे नहीं देखा और उसे भी दुबारा एक दूसरे ब्राह्मण को दान कर दिया। पहले ब्राह्मण ने अपनी गाय पहचान ली। इसी एक गलती की वजह से राजा नृग को एक हजार साल तक इस कैलासकुण्ड में पड़ा रहना पड़ा।

कैलासकुण्ड के आगे सूर्यनारायण का मन्दिर है। इसके आगे द्वारका शहर का पूरब की तरफ का दरवाजा पड़ता है। इस दरवाजे के बाहर जय और विजय की मूर्त्तियां हैं। जय और विजय बैकुण्ठ में भगवान के महल के चौकीदार हैं। यहां भी ये द्वारका के दरवाजे पर खड़े उसकी देखभाल करते हैं।

यहां से यात्री फिर निष्पाप कुण्ड पहुंचते हैं और इस रास्ते के मन्दिरों के दर्शन करते हुए रणछोड़जी के मन्दिर में पहुंच जाते हैं। यहीं परिक्रमा खत्म हो जाती है।

यही असली द्वारका है। इससे बीस मील आगे कच्छ की खाड़ी में एक छोटा-सा टापू है। इसपर बेट-द्वारका बसी है। गोमती द्वारका का तीर्थ करने के बाद

यात्री बेट-द्वारका जाते हैं। बेट-द्वारका के दर्शन के बिना द्वारका का तीर्थ पूरा नहीं होता। बेट-द्वारका पानी के रास्ते भी जा सकते हैं और जमीन के रास्ते भी।

जमीन के रास्ते जाते हुए तेरह मील आगे गोपी तालाब पड़ता है। यहां की आस-पास की जमीन पीली है। तालाब के अन्दर से भी पीले रंग की ही मिट्टी निकलती है। यात्री इसे बड़ा पवित्र मानते हैं और चन्दन की तरह इसे माथे पर लगाते हैं। इस मिट्टी को वे गोपीचंदन कहते हैं और इसे घर भी लाते हैं। यहां मोर बहुत होते हैं। गोपी तालाब से तीन मील आगे नागेश्वर नाम का शिवजी श्रौर पार्वतीजी का छोटा-सा मन्दिर है। यात्री लोग इसके दर्शन भी जरूर करते हैं।

कहते हैं, भगवान कृष्ण इस बेट-द्वारका नाम के टापू पर अपने घरवालों के साथ सैर करने आया करते थे। यह कुल सात मील लम्बा था। यह पथरीला है। यहां की शोभा बड़ी निराली है। यहां कई अच्छे और बड़े मन्दिर हैं। कितने ही तालाब हैं। कितने ही भंडारे हैं। धर्मशालाएं हैं और सदावर्त्त लगते हैं। मन्दिरों के सिवा समुद्र के किनारे घूमना बड़ा अच्छा लगता है।

बेट-द्वारका ही वह जगह है, जहां भगवान कृष्ण

ने अपने प्यारे भगत नरसी की हुण्डी भरी थी। बेट-द्वारका के टापू का पूरब की तरफ का जो कोना है, उस पर हनुमानजी का बहुत बड़ा मन्दिर है। इसीलिए इस ऊंचे टीले को हनुमानजी का टीला कहते हैं।

आगे बढ़ने पर गोमती द्वारका की तरह ही एक बहुत बड़ी चहारदीवारी यहां भी है। इस घेरे के भीतर पांच बड़े-बड़े महल हैं। ये दुमंजिले और तिमंजिले हैं। पहला और सबसे बड़ा महल श्रीकृष्ण का महल है। इसके दक्षिण में सत्यभामा और जाम्बवती के महल हैं। उत्तर में रुक्मिणी और राधा के महल हैं। इन पांचों महलों की सजावट ऐसी है कि आंखें चकाचौंध हो जाती हैं। द्वारका के मन्दिरों की सजावट यहां की सजावट के सामने फीकी है। इन मन्दिरों के किवाड़ों और चौखटों पर चांदी के पतरे चढ़े हैं। भगवान कृष्ण और उनकी चारों रानियों के सिंहासन पर भी चांदी मढ़ी है। मूर्तियों का सिंगार बड़ा ही कीमती है। हीरे, मोती और सोने के गहने उनको पहनाये गये हैं। सच्ची जरी के कपड़ों से उनको सजाया गया है।

रणछोड़जी के मन्दिर की ऊपर की मंजिलें देखने योग्य हैं। यहां भगवान की सेज है। झूलने के लिए झूला है। खेलने के लिए चौपड़ है। दीवारों में बड़े-बड़े शीशे

लगे हैं। इन सब झांकियों को देखकर मन खिल उठता है।

इन पांचों मन्दिरों के अपने अलग-अलग भण्डारे हैं। सजावट का सामान तैयार करने के लिए अलग-अलग कारखाने हैं। इन भण्डारों और कारखानों से तरह-तरह की मिठाइयां और दूसरे सामान मन्दिरों में जाते रहते हैं। रणछोड़जी के मन्दिर में दिन-रात में तेरह बार भोग लगता है। दिन-रात में नौ बार भगवान की आरती होती है। मन्दिरों के दरवाजे सुबह ही खुलते हैं। बारह बजे बन्द हो जाते हैं। फिर चार बजे खुल जाते हैं और रात के नौ बजे तक खुले रहते हैं।

इन पांच विशेष मन्दिरों के सिवा और भी बहुत से मन्दिर इस चहारदीवारी के अन्दर हैं। ये प्रद्युम्नजी टीकमजी, पुरुषोत्तमजी, देवकी माता, माधवजी, अम्बाजी और गरुड़जी के मन्दिर हैं। इनके सिवा साक्षी गोपाल, लक्ष्मीनारायण और गोवर्धननाथजी के मन्दिर और हैं। ये सब मन्दिर भी खूब सजे-सजाए हैं। इनमें भी चांदी-सोने का काम बहुत है।

बेट-द्वारका में कई तालाब हैं। रणछोड़ तालाब, रतन तालाब, कचौरी तालाब और शंख तालाब। इनमें रणछोड़ तालाब सबसे बड़ा है। इसकी सीढ़ियां पत्थर

की हैं। जगह-जगह नहाने के लिए घाट बने हैं। इन तालाबों के आस-पास भी बहुत से मन्दिर हैं। इनमें मुरलीमनोहर, नीलकण्ठ महादेव, रामचन्द्रजी और शंख-नारायण के मन्दिर खास हैं। लोग इन तालाबों में नहाते हैं और मन्दिरों में फूल चढ़ाते हैं।

रणछोड़जी के मन्दिर से डेढ़ मील चलकर शंख-तालाब आता है। इस जगह भगवान कृष्ण ने शंख नामक राक्षस को मारा था। इसके किनारे पर शंख-नारायण का मन्दिर है। शंख-तालाब में नहाकर शंख-नारायण के दर्शन करने से बड़ा पुण्य होता है।

बेट-द्वारका से समुद्र के रास्ते जाकर बिरावल बन्दरगाह पर उतरना पड़ता है। ढाई-तीन मील दक्षिण पूरब की तरफ चलने पर एक कस्बा मिलता है। इसी का नाम सोमनाथ पट्टन है। यहां एक बड़ी धर्मशाला है और बहुत-से मन्दिर हैं। कस्बे से करीब पौन मील पर हिरण्या, सरस्वती और कपिला इन तीन नदियों का संगम है। इस संगम के पास ही भगवान कृष्ण के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था।

कस्बे से करीब एक मील पश्चिम में चलने पर एक और तीर्थ आता है। यहां जरा नाम के भील ने कृष्ण भगवान के पैर में तीर मारा था। इसी तीर से घायल

होकर वह परम-धाम को गये थे। जब भगवान कृष्ण ने देखा कि सारे यादव लड़ मरे, सारे कुल का नाश हो गया, बलराम जंगलों में चले गए, तब वह भी इस जगह आकर लेट गये और महासमाधि लगा ली। उनका दायां पैर बायें घुटने पर रखा था। जरा भील ने दूर से देखकर उस पैर को हिरनी का मुंह समझा और तीर चला दिया। इस जगह को बाण-तीर्थ कहते हैं। यहां वैशाख में बड़ा भारी मेला भरता है।

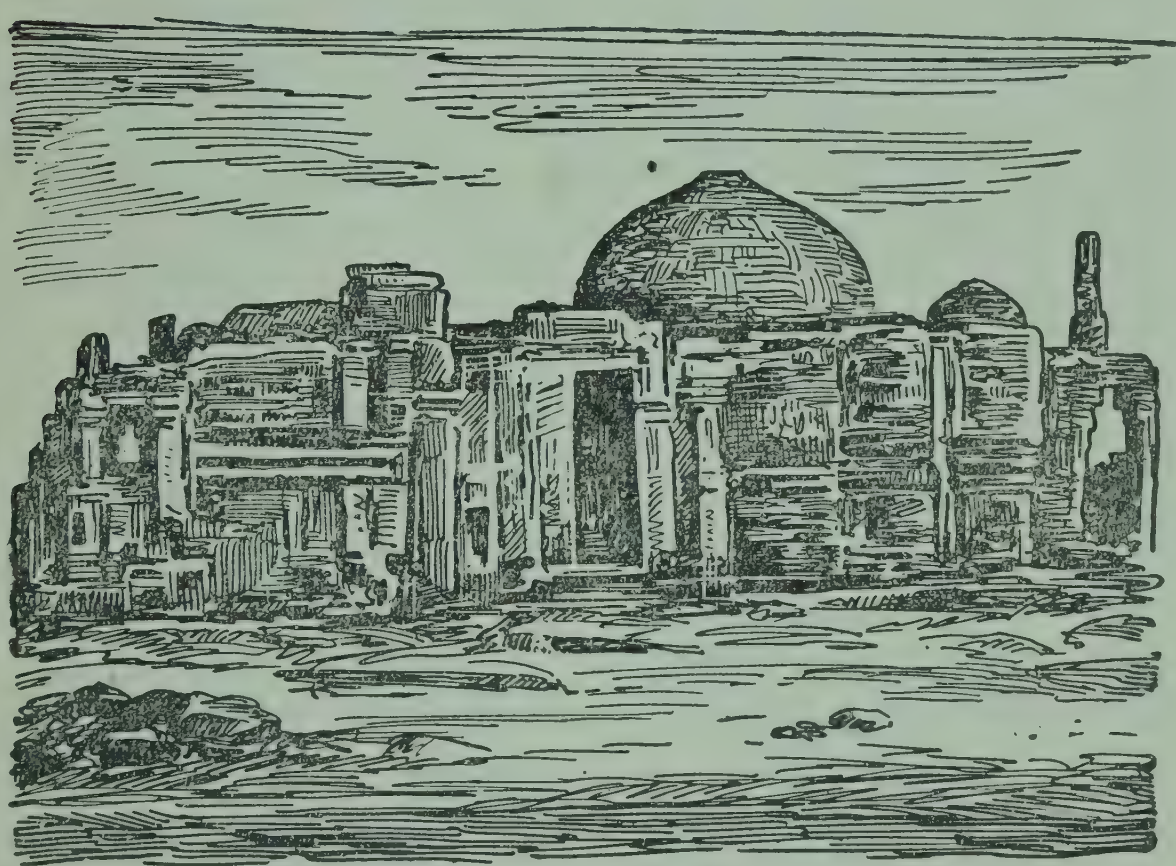
बाण तीर्थ से डेढ़ मील उत्तर में एक और बस्ती है। इसका नाम भालपुर है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि कृष्ण को जरा का तीर बाण-तीर्थ में न लगकर यहां लगा था। वहां एक पद्मकुण्ड नाम का तालाब है। लोगों का कहना है कि इस तालाब में भगवान ने अपने पैर का खून धोया था। यात्री लोग इस कुण्ड में भी नहाते हैं।

हिरण्या नदी के दाहिने तट पर एक पतला-सा बड़ का पेड़ है। पहले इस स्थान पर बहुत बड़ा पेड़ था। बलरामजी ने इस पेड़ के नीचे ही समाधि लगाई थी। यहीं उन्होंने शरीर छोड़ा था।

सोमनाथ पट्टन बस्ती से थोड़ी दूर पर हिरण्या नदी के किनारे एक स्थान है, जिसे यादवस्थान कहते हैं। यहां

पर एक तरह की लम्बी घास मिलती है, जिसके चौड़े-चौड़े पत्ते होते हैं। यह वही घास है, जिसको तोड़-तोड़ कर यादव आपस में लड़े थे और यही वह जगह है, जहाँ वे खत्म हुए थे ।

इस सोमनाथ पट्टन कस्बे में ही सोमनाथ भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर को महमूद ग़ज़नवी ने तोड़ा था। यह समुद्र के किनारे बना है। अब तो बिल्कुल



सोमनाथ-मन्दिर के खण्डहर

टूटा-फूटा पड़ा है, पर अब भी इसकी शान निराली है। इसमें काला पत्थर लगा है । इतने हीरे और रत्न इसमें

कभी जड़े थे कि देखकर बड़े-बड़े राजाओं के खजाने भी शरमा जायं। शिवलिंग के अन्दर इतने जवाहरात थे कि महमूद ग़ज़नवी को ऊंटों पर लाद कर उन्हें ले जाना पड़ा। महमूद ग़ज़नवी के जाने के बाद यह दुबारा न बन सका। लगभग सात सौ साल बाद इन्दौर की रानी अहिल्याबाई ने एक नया सोमनाथ का मन्दिर कस्बे के अन्दर बनवाया था। यह अब भी खड़ा है।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित अन्य प्राप्य साहित्य

१ आत्मकथा (गांधीजी) ५)
२ प्रार्थना प्रवचन २ भाग ५।।)
३ गीता-माता (गांधीजी) ४)
४ पंद्रह अगस्त के बाद १।।),२)
५ धर्मनीति (गांधीजी) १।।),२)
६ द० अफ्रीका का सत्याग्रह ३।।)
७ मेरे समकालीन (गांधीजी) ५)
८ आत्म-संयम ,, ३)
९ गीता-बोध ,, ।।)
१० अनासक्तियोग ,, १।।)
११ ग्राम-सेवा ,, ।=)
१२ मंगल-प्रभात ,, ।=)
१३ सर्वोदय ,, ।=)
१४ नीति-धर्म ,, ।=)
१५ आश्रमवासियों से ,, ।=)
१६ हमारी मांग ,, १)
१७ सत्यवीर की कथा ,, ।)
१८ संक्षिप्त आत्मकथा ,, १।।)
१९ हिंद-स्वराज्य ,, ।।।)
२० अनीति की राह पर ,, १)
२१ बापू की सीख ,, ।।)
२२ गांधी-शिक्षा (तीन भाग) १=)
२३ आज का विचार ,, ।=)
२४ ब्रह्मचर्य (दो भाग),, १।।।)
२५ गांधीजी ने कहा था ३ भाग ।।।)
२६ शान्ति-यात्रा (विनोबा) १।।)
२७ विनोबा-विचार : २ भाग ३)
२८ गीता-प्रवचन ,, १), १।।।)
२९ जीवन और शिक्षण ,, २)
३० स्थितप्रज्ञ-दर्शन (विनोबा) १)
३१ ईशावास्यवृत्ति ,, ।।।)
३२ ईशावास्योपनिषद ,, =)
३३ सर्वोदय-विचार ,, १=)
३४ स्वराज्य-शास्त्र ,, ।।।)
३५ गांधीजी को श्रद्धांजलि ,, ।=)
३६ भू-दान-यज्ञ (विनोबा) ।)
३७ राजघाट की संनिधि में ।=)
३८ विचार-पोथी (विनोबा) १)
३९ सर्वोदय का घोषणा-पत्र ,, ।)
४० जमाने की मांग (विनोबा) =)
४१ मेरी कहानी (नेहरू) ८)
४२ हिन्दुस्तान की समस्याएँ २।।)
४३ लड़खड़ाती दुनिया (नेहरू) २)
४४ राष्ट्रपिता ,, २)
४५ राजनीति से दूर ,, २)
४६ हमारी समस्यायें ,, ।।।)
४७ विश्व-इतिहास की झलक २१)
४८ सं० हिन्दुस्तान की कहानी ५)
४९ नया भारत (नेहरू) ।)
५० आजादी के आठ साल ।)
५१ गांधीजी की देन (राजे०) १।।)
५२ गांधी-मार्ग ,, =)
५३ महाभारत-कथा (राजाजी) ५)
५४ कुब्जा सुन्दरी ,, २)
५५ शिशु-पालन ,, ।।)
५६ मैं भूल नहीं सकता ,, २।।)
५७ कारावास-कहानी (सु.नै.) १०)
५८ गांधी की कहानी (लु. फि.) ४)
५९ भारत-विभाजन की कहानी ४)
६० बापू के चरणों में २।।)
६१ इंग्लैंड में गांधीजी २)
६२ बा, बापू और भाई ।।)
६३ गांधी-विचार-दोहन १।।)
६४ सर्वोदय-तत्व-दर्शन ७)
६५ सत्याग्रह-मीमांसा ३।।)
६६ बुद्धवाणी (वियोगी हरि) १)
६७ सन्त सुधासार ,, ११)
६८ श्रद्धाकण ,, १)
६९ प्रार्थना ,, ।।)
७० अयोध्याकाण्ड ,, १)

1630

७१ भागवत-धर्म (ह. उ.) ६॥)
७२ श्रेयार्थी जमनालालजी ,, ६॥)
७३ स्वतन्त्रता की ओर ,, ४)
७४ बापू के आश्रम में ,, १)
७५ मनन ,, १॥)
७६ मानवता के झरने (माव.) १॥)
७७ बापू (घ० बिड़ला) २)
७८ रूप और स्वरूप ,, ॥=)
७९ डायरी के पन्ने ,, १)
८० ध्रुवोपाख्यान ,, ।)
८१ स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय) १)
८२ मेरी मुक्ति की कहानी,, १॥)
८३ प्रेम में भगवान ,, २)
८४ जीवन-साधना ,, १।)
८५ कलवार की करतूत ,, ।)
८६ सामाजिक कुरीतियां ,, २)
८७ हमारे जमानेकी गुलामी,, ॥।)
८८ बुराई कैसे मिटे ? ,, १)
८९ बालकों का विवेक ,, ॥।)
९० हम करें क्या ? ,, ३॥)
९१ धर्म और सदाचार ,, १।)
९२ अंधेरे में उजाला ,, १॥)
९३ ईसा की सिखावन ,, १)
९४ कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल) २)
९५ लोक-जीवन (कालेलकर) ३॥)
९६ साहित्य और जीवन २)
९७ कब्ज (म० प्र० पोद्दार) १॥)
९८ हिमालय की गोद में ,, २)
९९ कहावतों की कहानियां ,, २)
१०० राजनीति प्रवेशिका १)
१०१ जीवन-संदेश (ख.जिब्रान) १।)
१०२ अशोक के फूल ३)
१०३ जीवन-प्रभात ५)
१०४ कां० का इतिहास ३ भाग ३०)
१०५ पंचदशी (सं० य० जैन) १॥)
१०६ सप्तदशी

१०७ रीढ़ की हड्डी १॥)
१०८ अमिट रेखायें ३)
१०९ एक आदर्श महिला १)
११० राष्ट्रीय गीत ।)
१११ तामिल-वेद (तिरुकुरल) १॥)
११२ आत्म-रहस्य ३)
११३ थेरी-गाथाएं १॥)
११४ बुद्ध और बौद्ध साधक १॥)
११५ जातक-कथा (आनंद कौ.) २॥)
११६ हमारे गांव की कहानी १॥)
११७ खादी द्वारा ग्राम-विकास ॥।)
११८ साग-भाजी की खेती ३)
११९ ग्राम-सुधार १।)
१२० पशुओं का इलाज (प.प्र.) ॥)
१२१ चारादाना ,, ।)
१२२ रामतीर्थ-संदेश (३ भाग) ।=)
१२३ रोटी का सवाल (क्रोपा०) १)
१२४ नवयुवकों से दो बातें ,, ।=)
१२५ पुरुषार्थ (डा० भगवान्दास) ६)
१२६ काश्मीर पर हमला २)
१२७ शिष्टाचार ॥)
१२८ तट के बंधन २)
१२९ भारतीय संस्कृति ३॥)
१३० आधुनिक भारत ५)
१३१ फलों की खेती २॥)
१३२ मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार ॥।)
१३३ नवजागरण का इतिहास ३)
१३४ गांधीजी की छत्रछाया में २॥)
१३५ भागवत-कथा ३॥)
१३६ जय अमरनाथ १॥)
१३७ हमारी लोककथाएं १॥)
१३८ संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२२ पुस्तकें) ८।)
१३९ समाज-विकास-माला (४२ पुस्तकें) १५॥।)

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

१७

छः आना